शिक्षक के निर्धारक तत्व :- स्वधारणा, आकांक्षा स्तर व कार्यात्मक मूल्यों की शिक्षा में उपयोगिता।

डॉ. किरन सती

शिक्षा विभाग, आम्रपाली शिक्षण संस्थान
हल्द्वानी, जिला- नैनीताल, उत्तराखण्ड

सार: सभी मानवीय कार्यकलापों की तरह शिक्षा में भी समाज की उदीयमान आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप परिवर्तन होते रहते हैं। मानव जीवन में जब नए लक्ष्य स्थापित होते हैंए तो समाज की आकांक्षाएँ भी बदल जाती हैं। शिक्षा की अवधारणा में चाहे जो भी परिवर्तन हो, मानव-मुक्ति, स्वतन्त्रता और न्यायपूर्ण समाज की रचना इसका अन्तिम लक्ष्य रहा है तथा भविष्य में भी रहेगा। मानव मुक्ति और न्यासपूर्ण समाज की परिभाषाएं विभिन्न विचारधाराओं के सापेक्ष बदलती रही हैं जिसके कारण शिक्षा प्रक्रिया और प्रभाव क्षेत्र के स्वरूप में भी स्वाभाविक रूपान्तरण होता रहा है। इस सन्दर्भ में ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जिनकी अध्यापन क्षेत्र में ही आगे बढ़ने की प्रवृत्ति हो। उपर्युक्त सन्दर्भ में योग्य शिक्षकों के व्यक्तित्व के गुणों तथा विशेषताओं से परिचित होना आवश्यक है। किसी राष्ट्र की गरिमा उसकी शिक्षा पद्धति के ऊपर निर्भर करती है, और शिक्षा पद्धति उसके गुणी शिक्षकों पर। शिक्षक राष्ट्र रूपी गाड़ी में पहिये की धरी के समान कार्य करता है। इसलिए मानव विकास से लेकर आज तक मानव समाज उसका ऋणी बना हुआ है। शिक्षक वह केन्द्रीय स्थल है जिसके चारों तरफ सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया घूमती रहती है।

मुख्य बिन्दुः- स्व-धारणा, आकांक्षा स्तर व कार्यात्मक मूल्य।

प्रस्तावना

सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का विस्तार शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करता है जो उसके शिक्षण के समय परिलक्षित होता है। शिक्षक को अपने विषय का पूर्णज्ञान होना चाहिए। उसे मनोविज्ञान का ज्ञाता होना चाहिए। प्रसिद्ध आदर्शवादी फ्राबेल के अनुसार - ''शिक्षालय एक बाग है, शिक्षार्थी कोमल पौधा है तथा शिक्षक कुशल माली है' (फ्राबेल)

शिक्षा का सम्बन्ध समाज तथा व्यक्ति दोनों से ही होता है। शिक्षा का लक्ष्य जीवन को समुन्नत बनाना, शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति, जीवन पद्धति में समानता, मानव जीवन को सरल बनाने में सहायता प्रदान करना आदि है, किन्तु वर्तमान में इनमें अन्तर आ गया है। विद्यालय में जो कुछ सिखाया जाता है उसे समाज में सामन्जस्यपूर्वक जीवन यापन करने में सहायक होना चाहिए। सामन्जस्य एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य अच्छे ढंग से अपनी परिस्थितियों को अनुकूल बनाने या अपने को परिस्थितियों के अनुसार व्यवस्थित करने के लिए प्रयास करता है। ताकि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा पर्यावरण और परिस्थितियों के साथ उसका सन्तुलित सम्बन्ध बना रहे एवं उनके मध्य पारस्परिक द्वन्द्व या चुनौती की स्थिति उत्पन्न हो। अतः इस कार्य हेतु शिक्षक को जानना चाहिए कि छात्रों के व्यवहारों में क्या परिवर्तन या संशोधन होना चाहिए। शिक्षा आयोग (1964-1966) में कहा गया है कि ''प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों को मिलकर ऐसी व्यावहारिक योजना बनानी चाहिए जो चरित्र की शिक्षा को सफल बना सके। यथार्थवादियों का भी मत है कि बालक को इस योग्य बनाना है कि वह वास्तविक जगत को पहचान सके और लौकिक एवं व्यावहारिक जीवन का रहस्य समझ सके। किसी भी युग में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षा नीति पर राष्ट्रीय परम्परा, राष्ट्रीय प्रतिभा तथा राष्ट्र की परिस्थिति के सम्बन्ध में विचार होता आया है। इसका कारण है कि किसी भी राष्ट्र के बहुमुखी विकास के लिए चरित्रवान, नैतिक गुण सम्पन्न नागरिक सबसे अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। सभ्य और सुसंस्कृत नागरिकों के निर्माण का दायित्व शिक्षा पर है, क्योंकि मानव के सन्तुलित और सर्वांगींण विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मानव समाज भारतीय संस्कृति को सहेजे हुए है। इसमें काल और स्थानगत भेदों को आत्मसात करने की अपूर्व क्षमता है। इसकी संस्कृति और सभ्यता में वृद्धि महान शिक्षकों के समय-समय पर दिए गए उपदेशों की व्यवहारिकता से होती रही है। मानवीय विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व के स्वरूप के विभिन्न मत विकसित होते रहे हैं, जिनमें एक व्यक्ति की अनुक्रियाओं के द्वारा उत्पन्न व्यवहारों के एकीकरण को किसी उद्दीपक के प्रति स्थापित किया जाता है। शिशु, बाल, किशोर और युवाओं के मनोविज्ञान में बड़ा अन्तर होता है। उनके मनोविज्ञान के आधार पर ही शिक्षा को विभिन्न स्तरों में बांटा गया है। जैसे- पूर्व प्राथमिक (शिशु), प्राथमिक (बालक), माध्यमिक (किशोर), और उच्च (युवा) में विभाजित किया गया है और इन सब स्तरों का महत्व अपने स्थान पर विशेष है। इस में शिक्षकों की स्व-धारणा, उनका आकांक्षा स्तर व उनके कार्यात्मक मूल्य की समीक्षा करने का प्रयास किया है। इस परिप्रेक्ष्य में उनके व्यक्तित्व के तीन गुणों समीक्षा करने का प्रयास किया है। शिक्षकों की स्व-धारणा, उनका आकांक्षा स्तर व उनके कार्यात्मक मूल्य। ये तीनों ही गुण शिक्षक के भावात्मक गुणों से सम्बन्धित हैं।

कार्यात्मक मूल्य :-

बुड्स के अनुसार ''मूल्य मानव व्यवहार के घटक तथा निर्धारक तत्व है। ये आदर्श और लक्ष्य दोनों का कार्य करते हैं।'

वर्तमान परिपेक्ष्य में किसी भी शैक्षिक सतर पर गुणवत्ता बनाए रखने की दृष्टि से व्यक्ति में व्यवसाय से जुड़े मूल्यों का होना नितान्त आवश्यक है। हम किसी भी कार्य की गुणवत्ता के लिए दूसरो पर दोषारोपण रोपण नहीं कर सकते हैं हर कार्य से जुड़ी हमारी भी कोई जवाबदेही बनती है। कार्यात्मक मूल्य से तातप्र्य यह है कि कोई व्यक्ति व्यवसाय से सम्बंधित किसी विचार या सिद्धान्त को कितना महत्व प्रदान करता है।

मूल्यों का सम्बन्ध गुणों से होता है जिन पर संस्था के विभिन्न आयामों को सफल बनाने कस दामोदार होता है मूल्य एक प्रकार से मानदण्ड है। कार्यात्मक मूल्यों की उत्पत्ति किसी विचारधारा से उत्पन्न होती है। ये मूल्य राष्ट्र की संस्कृति सम्प्रदाय को सुरक्षित रखती है। किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक विशेषता को वहाँ की शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत अध्यापकों के कार्यात्मक मूल्य ही प्रतिनिधित्व करते है। प्राचीन काल में शिक्षक अपने कार्य को जीवन का प्रमुख ध्येय समझते थे, परन्तु आज शिक्षण कार्य एक व्यवसाय बनकर रह गया है। और जीविकोपार्जन मूल्य उद्देश्य यह आवश्यक नहीं है कि जितने भी व्यक्ति शिक्षण व्यवसाय से जुडत्रे है व सभी इस धारणा से ओतप्रोत हो कि शिक्षण कार्य समाज की सबसे बड़ी सेवा है।बल्कि कुछ व्यक्ति ऐसे होते है तो अपने अभिष्ट लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकने की स्थिति में जीवन निर्वाह हेतु इस व्यवसाय को अंगीकार कर लेते हैं। ऐसे ही शिक्षकों के कार्यात्मक मूल्य संदेह के धेरे में आते हैं।

प्रत्येक मानव को जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होता है जो समय के साथ-साथ समृद्ध होते जाते हैं भविष्य में अनुभव समान्य सिद्धान्त जीवन जीने की एक विशिष्ट कला को जन्म देता है और उनके पथ प्रदर्शन के रूप में कार्य करता है।व्यक्ति के कार्यात्मक मूल्य इस बात के संकेत होते हैं कि अपने सीमित शक्ति एवं समय में क्या करना चाहता है। कार्यात्मक मूल्यों के अन्तर्गत आलपोर्ट वनर्न एवं लिटजेद्वारा बताए गये छः मूल्यों को समाहित किया जाता है। स्प्रैंगर सैद्धान्ति, आर्थिक,भौतिक, सामाजिक, राजनैतिक,धार्मिक ।

स्व-धारणा :-

आत्म सम्प्रत्यय (धारणा) का अर्थ है स्वयं के प्रति अपनाया गया दृष्टिकोण, अर्थात आत्म-मूल्यांकन से है। व्यक्ति खुद को जिस दृष्टिकोण से देखता है और स्वयं का प्रत्यक्षीकरण करता है वह ही उसका आत्म-सम्प्रत्यय है।

' आत्म सम्प्रत्यय मानव के व्यक्ति का वह गुण या स्व निर्मित विचार है जिसमें वह अपने संसार के प्रति प्रतिक्रिया या प्रत्यक्षीकरण करता है न कि उस संसार के प्रति जैसे कि वह अन्य व्यक्तियों द्वारा देखा जाता है और यह प्रत्यक्षीकरण परिपक्वता के साथ-साथ बदलते रहते हैं।' आत्म सम्प्रत्यय एक जटिल प्रक्रिया है। व्यक्ति अपने बारे में यह सोचता है कि वह क्या है और भावी जीवन में क्या होगा, प्रत्येक व्यक्ति का आत्म विकास होता है लेकिन वह कितना होगा वह उसके वातावरण पर निर्भर करता है।

आकांक्षा स्तर :-

आकांक्षा स्तर: चैहान (1999) ने आकांक्षा स्तर को परिभाषित किया कि ''आकांक्षा स्तर को परिभाषित किया कि आकांक्षा स्तर, किसी कार्य के उस स्तर से सम्बन्धित है जिसके लिए कोई व्यक्ति भविष्य के लिए आकांक्षा करता है। किसी व्यक्ति या समूह की क्रियात्मकता उसके आकांक्षा स्तर पर निर्भर करती है।' '

आकांक्षा आवश्यकताओं की जननी है। यह एक मनुष्य के व्यवहार को दिशा-निर्देश देने में, उसके विभिन्न कार्यकलापों को पूरा करने में तथा निश्चित उद्देश्य तक पहुॅचने में सहायक होते हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन का कोई न कोई लक्ष्य निर्धारित करता है। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो इच्छाए जन्म लेती है, उन इच्छाओं की आन्तरिक संरचना को ही हम आंकाक्षा स्तर कहते है। यह भविष्य में दिए गए कार्यो के अनुमान की ओर संकेत करती है। आकांक्षा स्तर एक व्यक्तिगत प्रेरणा है जो किशोर वर्ग सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अनुभवों को समाज से ग्रहण करता है और भविष्य की ओर बढ़ने के लिए तत्पर रहता है।आकांक्षाओं की पूर्ति उपलब्धि द्वारा होती है। अगर उसकी उपलब्धि लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है तो वह संतुष्ट हो जाता है। उपलब्धि स्तर आकांक्षा स्तर को निश्चित करने के उपरान्त ही प्राप्त होती है।

निष्कर्ष:-

शिक्षकों की स्व-धारणा, उनका आकांक्षा स्तर व उनके कार्यात्मक मूल्य। ये तीनों ही गुण शिक्षक के भावात्मक गुणों से सम्बन्धित हैं।

शिक्षक की स्व-धारणा उसकी शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करती है, यह आवश्यक नहीं, वरन् शिक्षार्थियों की स्वधारणा भी उनके अधिगम को प्रभावित करती है। संस्थागत शिक्षण परिस्थितियों में स्पष्ट है कि शिक्षक एवं शिक्षार्थी की स्वधारणा जहाँ एक ओर शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करती है, वहीं दूसरी ओर शिक्षार्थियों की अधिगमीय मात्रा को भी प्रभावित करती है। आकांक्षा स्तर व्यक्तित्व की ऐसी दूसरी विशेषता है जो व्यक्ति के अन्य व्यवहरों, क्रियाओं, प्रक्रियाओं व अन्तःक्रियाओं को प्रभावित करती है। अब तक के प्राप्त शोध निष्कर्षों के आधार पर हम कह सकते हैं कि व्यक्ति का आकांक्षा स्तर जितना अधिक वास्तविकता की परिसीमा के अनुकूल होता है, उसका व्यवहार भी उतना ही अधिक यथार्थता के धरातल पर होता है। शिक्षक की प्रभावशीलता तथा उसका संस्थागत व्यवहार इस परिप्रेक्ष्य में उसके आकांक्षा स्तर से प्रभावित होता ही है।

तीसरी शिक्षक विशेषता जो न केवल उसके शिक्षण कक्ष के व्यवहार को प्रभावित करती है, वरन् उस संस्था में भी, जिसमें वह कार्यरत है, उसके व्यवहार को प्रभावित करती है। कार्यात्मक मूल्य इस सन्दर्भ में शिक्षक की संस्था के प्रति आत्मीयता के भाव को निर्मित करने में सहायक होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

[1] भटनागर, जे0एन0 (1979), ''एन इन्वेस्टिगेशन इन टू द वैल्यू एस्पीरेशन एण्ड पर्सनालिटी ट्रेंड्स आॅफ राजस्थान' ' एम0बी0बुच, थर्ड सर्वे आॅफ रिसर्च इन एजूकेशन, पृष्ठ संख्या 333।

[2] ग्रोवर, एस0 (1979), ''पैरेन्टल एस्पीरेशन ऐज रिलेटेढ टू पर्सनालिटी एण्ड स्कूल एचिवमेन्ट पी0एच0-डी0 (साइकोलाॅजी) पैन यूनिवर्सिटी।

[3] गुप्ता, ए0 (1979), ''ए साइकोलाजिकल इस्ट्रेस रिलेटेड टू लेवल आॅफ एस्पीरेशन एण्ड एचिवमेन्ट मोटीवेशन' ' एम0बी0 बुच, थर्ड सर्वे आॅफ रिसर्च इन एजूकेशन, पृष्ठ संख्या 354।

[4] मुथा, डाॅ डी0एन0 (1980), ''प्रभावशाली एवं अप्रभावशाली शिक्षकों में अन्तर करने वाले अभिवृत्ति प्रेरक एवं व्यक्तित्व की पहचान का अध्ययन, पी-एच0डी0 साइकोलाॅजी, जोधपुर विश्वविद्यालय, एम0बी0बुच थर्ड सर्वे, वोल्यूम सेकेण्ड (1978-1983)

[5] कुमारी, एस0 (1981), ''सेल्फ एस्टीम एण्ड एस्पीरेशन एसज फैक्टर्स एफेक्टिव रिस्क टेकिंग बिहैहवयर एमांग डेवियन्ट एडोलसेन्टस' ' पी0एच0-डी0 साइकोलाॅजी आगरा यूनिवर्सिटी।

[6] **Gomati Mani and Gonsalves (1983),** A study of the self- concept of the student – teachers in relation to their performance in the practical teaching, Stella Matutina college of Edu. Madras, 1977.In Buch M.B., IIIrd Survey Vol. II 197801983

[7] मेमन, पी0एन0 (1982),''परफरमेन्स आॅफ स्टूडेन्ट्स आन पालिटेकनिक्स इन रिलेशन टू देयर एकेडमिक एचिवमेन्ट्स, इनटेलिजेन्स डिफरेन्सियल एटीट्यूटस एडजस्टमेन्ट्स एण्ड एस्पीरेशन लेवल' ' एम0बी0 बुच, थर्ड सर्वे आॅफ रिसर्च इन एजूकेशन, पृष्ठ संख्या 674.

[8] पन्नेर सेलवम, ए0 (1984), ''ए स्टडी आॅफ एजूकेशनल एण्ड आक्यूपेशनल एस्पीरेशन आॅफ पैरेन्ट्स इन चूजेन एग्रीकल्चर एण्ड इंडस्ट्रीयल कम्यूनिटी इन द त्रिचनापल्ली डिस्ट्रिक आॅफ तमिलनाडु' ' पीएच0-डी0 एडल्ट एजूकेशन, मद्रास यूनिवर्सिटी।

[9] प्रकाश, वी° (1984), ''स्टंडी आॅफ दी फैक्टर्स एफेक्टिंग लेवल आॅफ एस्पीरेशन' ' पीएच°-डी° एजूकेशन, कानपुर यूनिवर्सिटी।

[10] वंगू, एम°एल° (1984), ''हाईस्कूल शिक्षकों के प्रभावशीलता तथा व्यक्तित्व व विद्वतापूर्ण क्षमता का अध्ययन' ' , पी-एच°डी° (एजूकेशन), कश्मीर विश्वविद्यालय, एम°बी°बुच फोर्थ सर्वे, वोल्यूम सेकेण्ड (1983-1988)।

[11] रमन विहारी, लाल शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ पृष्ठ नं.-9-10।

[12] माथुर, एस.एम.-'' शिक्षा मनोविज्ञान'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, (2008), पृष्ठ संख्या-421-425